प्रकृति विज्ञान

प्राकृतिक रहस्य भावनात्मक ऊर्जा का

अशोक 'मानव'

मन जो सोचता है उस तरह की भावना आँख से निकल जाती है जो प्रकृति में अपनी पूर्ति के लिए क्रिया करती है जो प्रकृति का सहयोग मिल जाता है तो वह कार्य पूरा हो जाता है। इसी तरह की भावना अन्य जीव और निर्जीव भी छोड़ते हैं। प्रकाश रूपी मन हर जीव में एक वैज्ञानिक शरीर तैयार करता है । जो अपनी सुरक्षा आवश्यकता को तैयार करता है। **जैसे– मानव शरीर में खाने के लिए पत्थर रूपी दाँत रचना करता है। इसी तरह फूल गन्दगी को खाकर सुगन्ध दे रहा है।** हर जीव अपना कोई न कोई लाभ देकर प्रकृति का संचालित होने में अपना सहयोग दे रहा है। सूर्य प्रकाश अपनी ऊर्जा से प्रकृति में सजीव रूप का विकास करता है। वहीं प्रकाश निर्जीव में भी परिवर्तित ऊर्जा निकालता है जो सृष्टि के निर्माण में अपना गुण बिखेरता है इसकी पहचान अपने गुण के अनुसार हर जीव प्राणी करते हैं मन रूपी जीब बीज रूप में नहीं होता है इसमें धारण करने की क्षमता होती है मन रूपी प्रकाश प्रकृति में विचरण करता है। बीज रूप जब प्रकृति में अपनी जीने का साधन जुटा लेता है इसके बाद इस मन रूपी प्रकाश की इच्छा होती है तो उत्तेजना से मन रूपी प्रकाश को धारण कर लेता है। इसके बाद इस मन रूपी प्रकाश की इच्छा होती है अपने जीने का तत्व ग्रहण करना और उत्तेजना में ध्यान की विशेष से अपने जैसे जीव का निर्माण करना। इसके बीच की अवस्था में मन जैसा सोचता है उस तरह की भावनात्मक ऊर्जा निकल जाती है जो प्रकृति में क्रिया करती है। इस तरह की ऊर्जा हर जीव प्राणी छोड़ते हैं गुण विशेष के कारण जिस पदार्थ को भोजन अथवा औषधि के रूप में प्रयोग किय जाता है वे पदार्थ अपने जीवन काल में भावनात्मक ऊर्जा छोड़ते हैं जो प्रकृति में अन्य जीव प्राणी के अन्दर सूक्ष्म जीवाणु पैदा करता है। इस गुण से मन प्रकृति के वातावरण को पहचान लेता है फिर उसकी प्रकृति अस्वाभाविक गुण से लड़ने के लिए साधन जुटाने लगती है। इस प्राकृतिक अवस्था से हर जीव प्राणी को गुजरना पड़ता है।

मानव समाज अपने ध्यान, ज्ञान, विज्ञान और अनुभव पर प्रकृति के ऐसे पदार्थ को पहचानकर उसके गुण की व्याख्या करता है जिसका प्रयोग मानव समाज व्यवहारिक रूपसे करता है। अपने जीवन को आसान बनाने के लिए इसे साधन के रूप में प्रयोग करता है। गुण के अनुसार मानव समाज पदार्थ को महत्व देता है। एक पदार्थ हर जीव–प्राणी के लिए सहयोगी नहीं हो सकता है। पर उसका सहयोग अन्य जीव–प्राणी के लिए हो सकता है इसलिए कोई पदार्थ महत्वहीन नहीं है, सृष्टि निर्माण में हर पदार्थ को कहीं न कहीं कोई सहयोग अवश्य है। मानव समाज से अच्छा अन्य जीव–प्राणी अपने सहयोगी जीवाणु को पहचानते हैं। **मानव समाज स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण संग्रही हो जाता है। परिणाम स्वरूप इस विशेष ज्ञान से वंचित रह जाता है।** मानव के अतिरिक्त अन्य जीव प्राणी अपने इस विशेष ज्ञान के कारण प्रकृति में होने वाली घटना को पहले जान लेते हैं अपनी भावना व शब्द के माध्यम से इसे व्यक्त करते है। जैसे –भूकम्प आने से पहले गाय की बन्धन मुक्त होकर भागने की भावना या आँधी बरसात से पहले पंक्षी का उड़कर छिपने का ठिकाना खोजने जैसा दृश्य। इसी प्रकार प्रकृति की अन्य घटनाएँ इस अर्थ को सिद्ध करती हैं कि अन्य जीवप्राणी भी भावना को पहचानकर भावना छोड़ने का काम करते हैं। मानव समजा को अपने ध्यान, ज्ञान विज्ञान व अनुभव के आधार पर सहयोगी पदार्थ का विकास करना चाहिए। मानव समाज को विनाशकारी तत्वों ने इकट्ठा कर रखा है जिससे पल भर में जीव–प्राणी को नष्ट किया जा सकता है। अपने विशेष ज्ञान से मानव समाज इसे निष्क्रिय करने का तत्व ढूंढ सकता है। इसे ढूंढने के लिए उसे ध्यान में अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा। जिसे जानना होता है उसे इच्छाशक्ति से सोचकर मन को रोक देना होता है। इस क्रिया के द्वारा प्रकृति से वह बिल्कुल सही दृश्य खींचता है इसमें दिखायी देने वाला दृश्य या सुनाई देने वाला शब्द बिल्कुल सम्य होता है जिसका प्रयोग कीाी विफल नहीं जाता है। मानव समाज उत्तेजना में शुद्ध भावात्मक ऊर्जा छोड़कर क्रोध विनाशकारी कुविचार व असहयोगी जैसी भावानात्मक ऊर्जा जैसे प्रदूषण को खत्म कर सकता है अथवा इसे कम करने के लिए क्षेत्र विशेष में व्यवहारिक प्रयोग कर सकता है। यह प्रयोग अवश्य सफल होगा जिसका परिणाम तत्काल दिखायी देगा।❑

www.suryaashram.com